K. C. E. Society's

Moolji Jaitha College

An 'Autonomous College' Affiliated to K.B.C. North Maharashtra University, Jalgaon.

NAAC Reaccredited Grade - A (CGPA: 3.15 - 3rd Cycle) UGC honoured "College of Excellence" (2014-2019) DST(FIST) Assisted College



के. सी. ई. सोसायटीचे
मूळजी जेठा महाविद्यालय

क.ब.चौ. उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ, जळगाव संलग्नित 'स्वायत्त महाविद्यालय'

नॅकद्वारा पुनर्मानांकित श्रेणी -'ए'(सी.जी.पी.ए. : ३.१५ - तिसरी फेरी) विद्यापीठ अनुदान आयोगाद्वारा घोषित 'कॉलेज ऑफ एक्सलन्स' (२०१४-२०१९) डी.एस.टी. (फीस्ट) अंतर्गत अर्थसहाय्य प्राप्त

Date: 25/04/2025

NOTIFICATION

Sub :- CBCS Syllabi of B. A. in Sanskrit (Sem. V & VI)

Ref. :- Decision of the Academic Council at its meeting held on 22/04/2025.

The Syllabi of B. A. in Sanskrit (Fifth and Sixth Semesters) as per **NATIONAL EDUCATION POLICY – 2020 (2023 Pattern)** and approved by the Academic Council as referred above are hereby notified for implementation with effect from the academic year 2025-26.

Copy of the Syllabi Shall be downloaded from the College Website (www.kcesmjcollege.in)

Sd/-Chairman, Board of Studies

To:

- 1) The Head of the Dept., M. J. College, Jalgaon.
- 2) The office of the COE, M. J. College, Jalgaon.
- 3) The office of the Registrar, M. J. College, Jalgaon.

Khandesh College Education Society's MooljiJaitha College, Jalgaon An "Autonomous College" Affiliated to KavayitriBahinabaiChaudhari North Maharashtra University, Jalgaon-425001



STRUCTURE AND SYLLABUS

B.A.Honours/ Honours with Research (T.Y.B.A.SANSKRIT)

As per NEP-2020 Guidelines

Under Choice Based Credit System (CBCS) [w. e .f. Academic Year: 2025-26]

प्रस्तावना

उच्चिशिक्षण हे सर्वसमावेशक मूल्याधिष्ठीत व कौशल्याधिष्ठीत असावे ही उच्च शिक्षणाची पूर्वअट आहे आणि ती सैद्धांतिक संकल्पनांचे सखोल ज्ञान आणि अनुभवात्मक प्रात्यिक्षक पद्धतींद्वारे प्राप्त केली पाहिजे. UGC, NEP-2020 आणि महाराष्ट्र सरकारच्या मार्गदर्शक तत्त्वांनुसार मूळजी जेठा महाविद्यालय (स्वायत्त) ने विभाग-विशिष्ट संरचना स्वीकारली आहे. महाविद्यालयाच्या संस्कृत अभ्यास मंडळाने संस्कृतप्रथम वर्ष पदवीचा अभ्यासक्रम तयार केला आहे. या अभ्यासक्रमातून संस्कृत भाषा आणि साहित्य याविषयीची माहिती तसेचसंस्कृत लेखन व संभाषण ही भाषिक कौशल्ये विद्यार्थ्यांमध्ये विकसित होतील असा प्रयत्न केलेला आहे. संस्कृत विषयातील मूलभूत बाबींची माहिती व्हावी आणिसंस्कृत भाषाव्यवहार अधिक सुखकर व्हावा हा या अभ्यासक्रमाच्या रचनेमागील हेतू आहे. याशिवाय, प्रथम वर्षाच्या विद्यार्थ्यांना संस्कृतची भाषिक कौशल्ये शिकविली जातीलज्यामुळे विद्यार्थ्यांची रोजगारक्षमता वाढेल.

तीन/चार वर्षांच्या एकूण अभ्यासक्रमात प्राचीन, अर्वाचीन आणि आधुनिक संस्कृत साहित्य, संस्कृतची भाषिक कौशल्ये, संस्कृत व्याकरण आणि संगणकीय संस्कृत,व्यावहारिक संस्कृत, विविध माध्यमांसाठीची लेखन आणि संवाद कौशल्ये व वेद, दर्शन हे विषय असणार आहेत. याशिवाय, अभ्यासक्रमाची रचनासंस्कृत भाषा आणि भाषांतरमीमांसा यांसारख्या अभ्यासपत्रिका विविध क्षेत्रातील वर्तमान आणि भविष्यातील गरजा पूर्ण करण्यासाठी तयार करण्यात आलेल्या आहेत.ज्यातून विद्यार्थ्यांची विविध कौशल्ये विकसित करण्यावर भर देण्यात आला आहे. या अभ्यासक्रमात प्रात्यक्षिकाचा देखील समावेश आहे. प्रत्येक पेपरचा तपशीलवार अभ्यासक्रम सुचवलेल्या अधिक वाचनासाठीच्या संदर्भांच्या यादीसह जोडला आहे.

Program Specific Outcome (PSO) B.A. Sanskrit Honors / honor's with Research

After completion of this course, students are expected to learn/understand the:

| PSO No. | PSO | |
|---------|--|------------|
| 1. | Develop Attitude of Literary Forms. (Sanskrit Poetry, Stor Novel, Drama) | ry, |
| 2. | Develop Reading, Writing & Communication Skills of Stud | dents. |
| 3. | Develop Attitude of Sanskrit Linguistics & Grammar. | |
| 4. | Information about the history of Sanskrit Literature. | |
| 5. | Information about Literary Theory. | |
| 6. | Develop Critic and Research Attitude in Sanskrit Literature | 2 . |

Multiple Entry and Multiple Exit options:

The multiple entry and exit options with the award of UG certificate/ UG diploma/ or three-year degree depending upon the number of credits secured;

| Levels | Qualification Title | Credit Requirements Semester | | Year | |
|--------|--|------------------------------|---------|------|---|
| | | Minimum | Maximum | | |
| 4.5 | UG Certificate | 40 | 44 | 2 | 1 |
| 5.0 | UG Diploma | 80 | 88 | 4 | 2 |
| 5.5 | Three Year Bachelor's Degree | 120 | 132 | 6 | 3 |
| 6.0 | Bachelor's Degree- Honours Or Bachelor's Degree- Honours with Research | 160 | 176 | 8 | 4 |

DEPARTMENT OF SANSKRIT TYBA STRUCTURE AS PER NEP-2020

YEAR 2025-26

| | | | TY | YBA SANSKRIT | |
|------------------|---------|----------------|-----------|----------------------------------|---|
| | | | 1 | TYBA SEM-V | |
| Course | Credits | Hours/ Week | TH/ PR | Code | Title of the Paper |
| DSC | 2 | 2 | TH | SAN-DSC-351 | The Tradition of Knowledge in Sanskrit Literature संस्कृत साहित्यातील ज्ञान परंपरा |
| DSC | 4 | 4 | TH | SAN -DSC-352 | Rugvediy sukte ऋग्वेदीय सूक्ते |
| DSC | 4 | 4 | TH | SAN -DSC-353 | Sanskrit Grammar -I संस्कृत व्याकरण १ |
| DSE | 4 | 4 | TH | SAN -DSE-351(A) SAN -DSE-351(B) | Kathopanishad कठोपनिषद् Sanskrit Composition and |
| | | | | , , | Communication I |
| VSC | 4 | 4 | TH | SAN -VSC-351 | Sanskrit Sanwad Vikas संस्कृत संवाद विकास |
| OJT/INT/ APPT | 4 | 8 | PR | SAN -INT-351 | On Job Training /Internship |
| | | | 7 | TYBA SEM-VI | |
| DSC | 2 | 2 | TH | SAN -DSC-361 | Modern Sanskrit Literature आधुनिक संस्कृत साहित्य |
| DSC | 4 | 4 | TH | SAN -DSC-362 | Athrvavediy Sukte अथर्ववेदीय सूक्ते |
| DSC | 4 | 4 | TH | SAN -DSC-363 | Sanskrit Grammar -II |

| | | | | | संस्कृत व्याकरण - २ |
|-----|---|---|----|-----------------|--------------------------|
| DSC | 4 | 4 | TH | SAN -DSC-364 | Drama |
| | | | | | नाटक |
| DSE | 4 | 4 | TH | SAN -DSE-361(A) | |
| | | | | | Taittariyopanishad |
| | | | | | उपनिषद (तैतरियोपनिषद) |
| | | | | SAN -DSE-361(B) | Sanskrit Composition and |
| | | | | | Communication- II |
| VSC | 4 | 4 | TH | SAN -VSC-361 | Sanskrit Lekhan Vikas |
| | | | | | |
| | | | | | संस्कृत लेखन विकास |
| | | | | | |

DSC: Department-Specific Core **ENG**: English

course

DSE: Department-Specific **ES**: Environmental studies

elective CI : Constitution of India

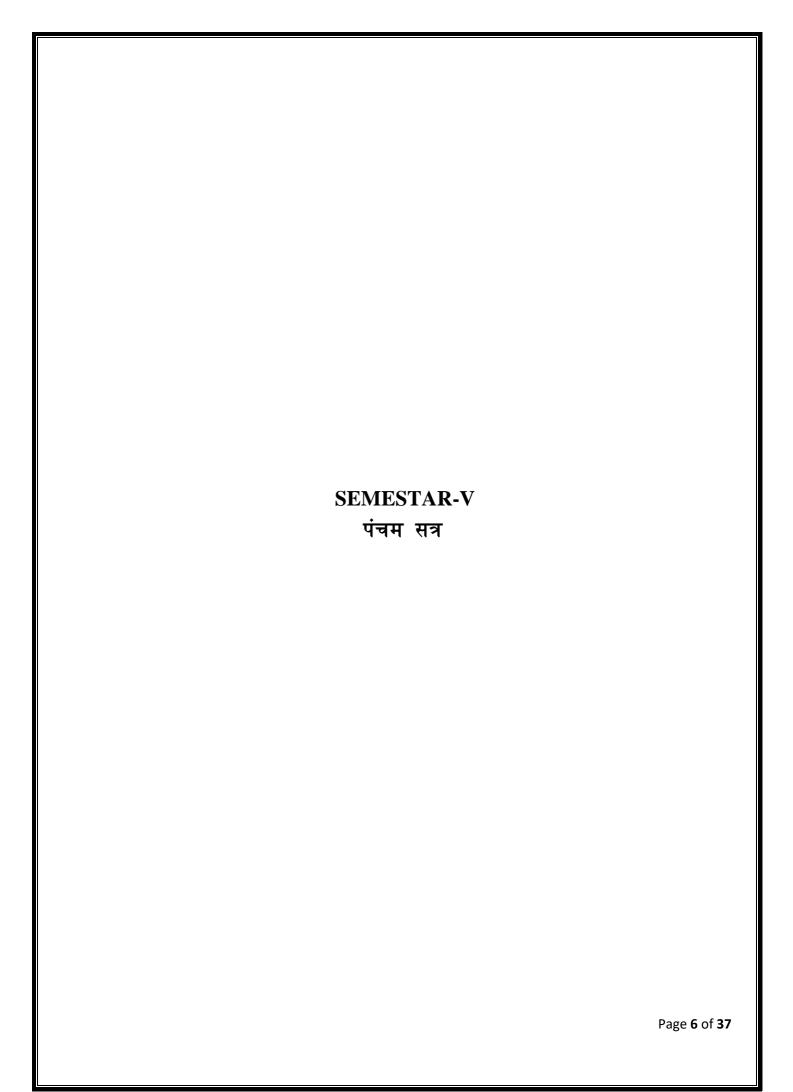
GE/OE: Generic/Open elective **IKS**: Indian Knowledge System

SEC: Skill Enhancement Course **CC**: Co-curricular course

MIN : Minor course TH : Theory
AEC : Ability Enhancement PR : Practical

Course

VEC: Value Education Courses



कला तृतीय वर्ष(संस्कृत) पंचम सत्र SAN-DSC-351

The Tradition of Knowledge in Sanskrit Literature संस्कृत साहित्यातील ज्ञान परंपरा

श्रेयांक : २

| रूण तास : ३० | अन्तगर | त गुण: ३० |
|--------------|---|-----------|
| Course | 1. To study the importance of Indian Knowledge . | |
| objectives | 2. To study the Importance of Indian Science. | |
| | 3. To provide the students Indian knowledge. | |
| | 4. To study the ancient knowledge of Sanskrit. | |
| Course | At the end of course, the students will be able to; | |
| outcome s | 1. know the importance Indian Knowledge | |
| | 2. learn the Importance of Indian Science. | |
| | 3. get the Indian knowledge. | |
| | 4. know ancient knowledge of Sanskrit | |
| | • | |
| घटक | घटक विश्लेषण | तासिका |
| ı | भारतीयपरंपरा विज्ञान परंपरा | 08 |
| | 1.1 धातू विज्ञान | |
| | 1.2 विमान विद्या | |
| | 1.3 गणित शास्त्र | |
| | 1.4 रसायनशास्त्र | |
| II | 2.1 स्थापत्य शास्त्र | 07 |
| | 2.2 वनस्पती विज्ञान | |
| | 2.3 प्राणी विज्ञान | |
| | 2.4 ध्वनी विज्ञान | |

| III | 3.1 कृषी विज्ञान | 08 |
|---------|------------------------------|----|
| | 3.2 वृक्षांची काळजी | |
| | 3.3 लिपी विज्ञान | |
| | 3.4 वस्त्र उद्याग | |
| Unit IV | प्राचीन जल व्यवस्थापन | 07 |
| | 4.1 वेदातील जल संरंक्षण | |
| | 4.2 जल संरक्षण उपाय | |
| | 4.3 रामायण कालीन जल संरक्षण | |
| | 4.4 महाभारतकालीन जल संरक्षण. | |

Study Resourc

es

- 1. सोनी सुरेश, *भारताची उज्ज्वल विज्ञान परंपरा,* अनुवादक-क्षीरसागर क. कृ. 2005 .
 - 2. देव द्या, वेदो में पर्यावरण शिक्षा, जयपूर, सुरभि प्रकाशन, २०१७
- 3. वराहमिहिर, *बृहत्संहिता*, संपादक, आठले जनादर्न हरि, पुणे, वरदा प्रकाशक, २०१५
- 4. भलवतकर भाग्यश्री, *प्राचीन भारतीय जलव्यवस्थापन*, जळगाव, अथर्व प्रकाशन, २०२३
- 5. कुलकर्णी र. पु. *कौटिलीय अर्थशास्त्रातील शिल्पशास्त्र*, मुंबई, महाराष्ट्रराज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळ.२०२१
 - 6. घाटे निरंजन, *आपल्या पूर्वजांचे विज्ञान*,
 - 7. वेलणकर श्री. भि. प्राचीन भारतीय भौतिक विज्ञान.
- 8. पराशर, कृषिपराशर, संपादक प्रो. रामचंद्र पांडेय, दिल्ली, मोतीलाल बनारसी दास,२००२
 - 9. भारतीया विज्ञान परंपरा, दिल्ली, संस्कृत भारती,
 - १०. Science in Sanskrit, delhi, Sanskrit Bharti 2021
- 11. त्रिपाठी उपेन्द्र कुमार, *यजुर्वेद में पर्यावरण*, वाराणासी, चौखंबा संस्कृत भवन, २००८
- १२. सोजीत्रा विजय एस.,*वैदिक संस्कृती और पर्यावरण* संरक्षण,जयपूर, पैराडाइज पुब्लिकेशन, २०११
- १३. शास्त्री शंकर लाल,*संस्कृत वाङ्मय में पर्यावरण*,जयपूर, हंसा प्रकाशन. २००९
 - १४) भास्कराचार्य, लीलावती,पुणे, आनंदाश्रम संस्कृत ग्रंथावली,१९३७
- १५) वर्तक वि. प. *वैदिक विज्ञान व वेदकालीन निर्णय*, पुणे, वर्तक प्रकाशन, २००४

कला तृतीय वर्ष पंचम सत्र SAN-DSC-352 RUGVEDIY SUKTE ऋग्वेदीय सूक्ते

श्रेयांक : ४ बहिस्थ गुण :६० एकण तास : ६० अंतर्गत गण:४०

| एकूण तास : ६ | o | गित गुण:४० |
|-----------------------|--|-------------|
| Coarse Objectives: | This course aims to get the students to know the importance of and Literature To enable students to study Vedic language and grammar. To enable students with great <i>Devatas</i> and their powers. To make students aware of the great ancient heritage of Sanskrit hy literature | |
| Coarse | At the end of course, the students will be able to. | |
| Outcomes: | know the importance of Vedic LiteratureUnderstand the Vedic language and grammar. | |
| | learn about great poet and there literature of Sanskrit | |
| | Students will get awareness of the great ancient heritage of Sansk literature | rit hymns & |
| घटक | घटक विश्लेषण | तास |
| | 1.1: वेदाचा परिचय, काळ,1.1 नैसर्गिक देवतांचे महत्त्व. | |
| ı | 1.2 सूर्य सूक्त. ऋग्वेद १.११५ | १५ |
| ' | 1.3 उषा सूक्त. ऋग्वेद ५.८०, | , , |
| | 1.4: देवतांचा महिमा, देवतांचे मानवीकरण व महत्त्व. | |
| | 2.1: पर्जन्य सूक्त ऋग्वेद ५.८३ | |
| II | 2.2: पर्जन्य आणि मानवी संबंध. | १५ |
| | 2.3: अक्ष सूक्त १०.३४ | , , |
| | 2.4: नैसर्गिक देवतांचे मानवी जीवनात महत्त्व व महिमा. | |
| III | 3.1: सोम सूक्त. ऋग्वेद ९.११३ | |
| | 3.2: सोमाचे वैदिक साहित्यातील महत्त्व. | १५ |
| | 3.3: पुरुष सूक्त. १०.९० | , , |
| | 3.4: पुरुष सूक्त आणि सृष्टी विकास. | |
| | वेद परिचय | |
| | | |

| | 4.1: वेदातील संवाद सूक्तांचे महत्त्व. | |
|------------|--|-----|
| n. / | 4.2: सरमापणि सूक्त. ऋग्वेद १०.१०८ | १५ |
| IV | 4.3: इंद्र नदी संवाद सूक्त. ऋग्वेद १.३३ | , , |
| | 4.4: वेदातील संवाद व भाषाशैली. | |
| अभ्यासाचे | | |
| स्रोत : | 1.कुलकर्णी भीमराव संपा. ऋग्वेद . पुणे .प्रका. श्री. सं. वि. कुलकर्णी वेदार्थ प्रकल्प | |
| Suggest ed | द्वारा सदामंगल ११७०/१९ शिवाजी नगर,२००७ | |
| Readi ng: | 2. वैद्य चि. वि. <i>वैदिक वाङ्मायाचा इतिहास.पुणे.</i> सुयोग प्रकाशन.२९९० | |
| | 3.दांडेकर रा. ना <i>वैदिक देवता</i> . गायत्री प्रकाशन. १९८० | |
| | 4. डांगे सिंधू. <i>भारतीय साहित्याचा इतिहास,</i> नागपूर, मंगल प्रकाशन ,.१९७५ | |
| | 5.वेलणकर, पराडकर, जोशी. ह.द.संपा. ऋक् सूक्त वैजयन्ति. पुणे. प्रकाशक, टी. म. वि. वैदिक संशोधन मंडळ. १९६५ | |
| | 6.Macdonell, <i>Munshiram Manoharlal History of Sanskrit Literature</i> , Delhi, 1958 | |
| | 7. Chaubey B.B.(Ed) <i>The New Vedic Selection</i> . Varanasi, Bharatiya Vidya Prakashan,1965 | |
| | 8. Chaubey B.B.(ED) <i>The New Vedic Selection – Part II.</i> Varanasi, Bharatiya Vidya Prakashan,1992 | |
| | 9.शिश प्रभा कुमार. <i>वैदिक अनुशीलन</i> दिल्ली विद्याभारती प्रकाशन २०१७ | |
| | 10.जियालाल कम्बोज. संपा. ऋ <i>ग्वेद</i> . दिल्ली विद्याभारती, प्रकाशन | |
| | 11. डॉ मुग्धा गाडगीळ, डॉ शिल्पा सुमंत, संपा. ऋग्वेद दीपिका पुणे, भंडारकर प्राच्य विद्या मंदिर, २०२३ | |
| L | | |

कला तृतीय वर्ष पंचम सत्र SAN -DSC- 353 SANSKRIT GRAMMAR -I

संस्कृत व्याकरण -१

| | संस्कृत व्याकरण - १ | |
|-----------------------|---|-------------|
| श्रेयांक : ४ | बहिः | स्थ गुण :६० |
| एकूण तास : ६० | अंत | र्गत गुण:४० |
| Course Objectives: | To study the importance of Sanskrit grammar. To study the basic knowledge of grammar To provide the students knowledge of grammar skills. To study the basic grammar of Sanskrit like <i>karaka</i>, <i>sandhi</i> et | с. |
| Coarse Outcomes: | At the end of course, the students will be able to know the importance of Sanskrit grammar Learn the basic knowledge of grammar. Get the grammar skills. Know the basic knowledge of grammar of Sanskrit like <i>karak</i> etc. | a, sandhi |
| घटक | घटक विश्लेषण | तास |
| | संज्ञा, कारक प्रप्रकरण, लघुसिद्धांत कौमुदी | |
| | 1.1: माहेश्वरी सूत्र व प्रत्याहार परिचय | |
| | 2.2: संज्ञा सूत्र व वर्णोच्चारण,प्रयत्न परिचय | |
| I | 3.3: कारक कर्ता, प्रातिपदिकार्थ० | १५ |
| | 4.4: कर्म, कर्तुरीप्सिततं कर्म | |
| | 2.1: करण, साधकतमं करणम् | |
| | 2.2: कर्तृकरणयोस्तृतीया | १५ |
| 11 | 2.3. संप्रदान,चतुर्थी संप्रदाने | 7,7 |
| | 2.4: नम: स्वस्तिस्वाहास्वधालंवषड्योगाच्च | |
| | 3.1: अपादान, अपादाने पंचमी | १५ |
| , , , | 3.2: ध्रुवमपायेsपादानम् | |
| 111 | 3.3: षष्ठी विभक्ती | |
| | 3.4: षष्ठी शेषे | |

| | 4.1: सप्तमी विभक्ती | |
|--------------------------------------|--|----|
| | 4.2: अधिकरण | |
| | 4.3: आधारो अधिकरणम् | |
| | 4.4: सप्तम्यधिकरणे च | १५ |
| | | |
| अभ्यासाचे स्रोत: | | |
| | १.वरदराज,१. <i>वैयाकरणसिद्धांतकौमुदी</i> . वाराणसी.चौखम्भा सुरभारती | |
| - Cummostod | प्रकाशन.२००२ | |
| Suggested | २.वरदराज,२. <i>लघुसिद्धांतकौमुदी.</i> वाराणसी.चौखम्भा सुरभारती | |
| Reading: | प्रकाशन.२००२ | |
| | ३.द्विवेदी कपिलदेव. <i>संस्कृत – व्याकरण एवं लघुसिद्धांतकौमुदी.</i> | |
| | वाराणसी. विश्वविद्यालय प्रकाशन.१९९८ | |
| | ४.शास्त्रीभैमीव्याख्या. <i>लघुसिद्धांतकौमुदी</i> . मेरठ.भीमसेन साहित्य भंडार | |
| | सुभाष चौक.२००४ | |
| | ५.सोमलवार नीला <i>लघुसिद्धांतकौमुदी</i> . नागपुर.(कौमुदी विहार) | |
| | कौमुदी प्रकाशन यवतमाळ १९९५ | |
| | ६.झा श्रीकलानाथ. <i>कारक-दर्शनम् .</i> वाराणसी.चौखम्भा सुरभारती | |
| | प्रकाशन.१९९१ | |
| | ७,भारव्दाज रमेश, वत्स शास्त्री,७. झा अमरजी. <i>संस्कृत-व्याकरण-</i> | |
| | <i>प्रवेशिका. दिल्ली,</i> विद्या भारती प्रकाशन,२०१७ ८.दीक्षित भट्टोजी घिल्डियाल श्रीधरानन्द(हिंदी अनुवाद) | |
| | | |
| | <i>वैयाकरणसिद्धांतकौमुदी-कारक प्रकरण,</i> दिल्ली, मोतीलाल बनारसी | |
| | दास प्रकाशन,२०१६ | |
| | ९.शास्त्री राम बालक शर्मा, गिरिजा प्रकाशन. <i>संस्कृत रचानानुवाद</i> | |
| | <i>चन्द्रिका</i> . दिल्लीमोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन २०१६ | |
| | १०.शास्त्री चारुदेव,१०. <i>व्याकरण चंद्रोदय (५ खंड) कारक व समास,</i> | |
| | दिल्ली मोतीलाल बनारसी दास प्रकाशन २०१६ | |
| | | |

कला तृतीय वर्ष पंचम सत्र SAN-DSE -351 (A) KTHOPANISHAD कठोपनिषद्

| | KTHOPANISHAD | |
|-----------------------|--|----------------|
| | कठोपनिषद् | |
| श्रेयांक : ४ | | बहिस्थ गुण :६० |
| एकूण तास : ६० | | अंतर्गत गुण:४० |
| Coarse Objectives: | To study the Indian philosophy. To study the importance of philosophy in human life. To study the philosophy of <i>Kathopanishada</i> To study the philosophy of <i>Kathopanishada</i> | |
| Coarse Outcomes: | At the end of course, the students will be able to. 1. understand the Indian philosophy. 2.know the importance of philosophy in human life. 3.learn the philosophy of <i>Kathopanishada</i> . 4.know the philosophy of <i>Kathopanishada</i> | |
| घटक | घटक विश्लेषण | तास |
| | कठोपनिषद् | |
| ı | 1.1: वाजश्रवस निचकेता संवाद 1.2: अतिथी सत्कार व यम निचकेता संवाद 1.3: प्रथम तथा द्वितीय वर 1.4: तृतीय वर आणि आत्मज्ञान जिज्ञासा | १५ |
| II | 2.1: श्रेय -प्रेय विवेचन2.2: यम द्वारे नचिकेताची प्रशंसा2.3: आत्मज्ञान प्राप्तीचे उपाय2.4: जीवात्मा व परमात्मा तत्व उपदेश | १५ |
| III | 3.1: ब्रह्म विषयक प्रतिपादन 3.2: विवेकी लोक आणि ब्रह्म 3.3: आत्मज्ञानीचे व्यवहार 3.4: अंगुष्ठ मात्र आत्मज्योती | १५ |

| VI | 4.1: एकादश द्वारयुक्त शरीर 4.2: शाश्वत शांतीची प्राप्ती 4.3: मनबुद्धी आणि इंद्रियवर्णन 4.4: ब्रह्मप्राप्ती | १५ |
|-------------------|--|----|
| अभ्यासाचे स्रोत : | | |
| | 1. कठोपनिषद् संपा. राजेंद्र प्रसाद शर्मा , जगदीश संस्कृत पुस्तकालय जयपूर | |
| | राजस्थान 2011 . | |
| | 2. विद्यामार्तंड डों. सत्यव्रत सिद्धांतालंकार 2.एकादशोपनिषद् विजयकृष्ण | |
| | लखनपाल w -77 a ग्रेटर कैलाश-1 नई दिल्ली -48 | |
| | 3. कठोपनिषद संपा.डॉ. सत्यव्रत सिंह. वाराणासी,चौखंबाप्रकाशन,१९ | |
| | 4. उपनिषद् प्रकाश (मराठी) . महात्मा नारायण स्वामी विजयकुमार गोर्विंदराम हासानंद, 4408 नई सडकदिल्ली -06 | |
| | 5. कठोपनिषद् – वाराणासी चौखंबा, सुरभारती प्रकाशन १९९२ | |
| | 6. कठोपनिषद — गीताप्रेस, गोरखपुर प्रकाशन 2010 | |
| | 7. कठोपनिषद – स.कृ. देवधर, प्रसाद प्रकाशनपुणे १९१० | |

कला तृतीय वर्ष पंचम सत्र **SAN-DSE -351 (B)** From Swayam course (Sanskrit Composition and Communication) श्रेयांक : ४ बहिस्थ गुण :६० अंतर्गत गुण:४० एकूण तास : ६० Coarse 1. To study the basic Sanskrit Knowledge. **Objectives:** 2. To study the importance of Sanskrit Language. 3. To study the Communication of Sanskrit Language 4. To study the Sanskrit Composition& Grammar At the end of course, the students will be able to. Coarse **Outcomes:** 1.understand the basic Sanskrit Knowledge. 2.know the importance of Sanskrit Language. 3.learn the Communication of Sanskrit Language 4.know the Sanskrit Composition& Grammar. घटक तास घटक विश्लेषण सप्ताहः-1 लघुसिद्धान्तकौम्दीस्थ-विभक्त्यर्थप्रकरणम - 1 (व्याकरण-प्रत्याहारादिपरिचयः) १५ लघुसिद्धान्तकौमुदीस्थ-विभक्त्यर्थप्रकरणम - 2 (संजादिपरिचयः) लघ्सिद्धान्तकौम्दीस्थ-विभक्त्यर्थप्रकरणम - ३ (अच्सन्धि परिज्ञानम) लघुसिद्धान्तकौमुदीस्थ-विभक्त्यर्थप्रकरणम् - 4 (हलसन्धि परिज्ञानम्) I लघुसिद्धान्तकौम्दीस्थ-विभक्त्यर्थप्रकरणम् - 5 (विसर्गसन्धिप्रभृति परिज्ञानम्) सप्ताहः-2 लघुसिद्धान्तकौमुदीस्थ-विभक्त्यर्थप्रकरणम् - ६ (कारकादिपरिचयः प्रथमाविभक्तिश्व) लघुसिद्धान्तकौमुदीस्थ-विभक्त्यर्थप्रकरणम् - 7 (कर्मकारक द्वितीयाविभक्तिश्व) लघ्सिद्धान्तकौम्दीस्थ-विभक्त्यर्थप्रकरणम् - 8 (कर्तृकरणादिसंज्ञाविधानं तृतीया-चतुर्थीविभक्तिश) लघुसिद्धान्तकौमुदीस्थ-विभक्त्यर्थप्रकरणम् - १ (अपादानाधिकरणादि-संज्ञाविधानं पंचम्यादिविभक्तिश्व)

| | सप्ताहः-3 | |
|-----------|--|---|
| | वाच्यम् (कर्तृकर्मभाववाच्यानि) -1 | |
| | वाच्यम् (कर्तृकर्मभाववाच्यानि) -2 | \ |
| | वाच्यम् (कर्तृकर्मभाववाच्यानि) -3 | |
| | वाच्यम् (कर्तृकर्मभाववाच्यानि) -4 | |
| | सप्ताहः-4 | |
| II | लघुसिद्धान्तकौमुद्यनुसारं कृत्प्रत्ययाः - 1 (तव्यत्प्रत्ययः) | |
| | लघुसिद्धान्तकौमुद्यनुसारं कृत्प्रत्ययाः - २ (अनीयर-यत्-ण्यत्-प्रत्ययाः) | |
| | लघुसिद्धान्तकौमुद्यनुसारं कृत्प्रत्ययाः -3(शतृशानच्प्रत्ययौ) | |
| | लघुसिद्धान्तकौमुद्यनुसारं कृत्प्रत्ययाः - 4 (क्त-क्तवतुप्रत्ययौ) | |
| | | |
| | सप्ताहः-5 | |
| III | लघुसिद्धान्तकौमुचनुसारं कृत्प्रत्ययाः - 5 (क्त्वाप्रत्ययः) | 8 |
| | 1515लघुसिद्धान्तकौमुचनुसारं कृत्प्रत्ययाः – 6 (क्त्वाप्रत्ययः) | |
| | लघुसिद्धान्तकौमुद्यनुसारं कृत्प्रत्ययाः - ७ (ल्यप्प्रत्ययः) | |
| | लघुसिद्धान्तकौमुद्यनुसारं कृत्प्रत्ययाः - 8 (तुमुन्प्रत्ययः) | |
| | सप्ताहः-6 | |
| IV | लघुसिद्धान्तकौमुद्यनुसारं कृत्प्रत्ययाः - 9 | 8 |
| | लघुसिद्धान्तकौमुद्यनुसारं कृत्प्रत्ययाः - 10 | |
| | लघुसिद्धान्तकौमुद्यनुसारं कृत्प्रत्ययाः - 11 (तद्वितेषुमतुप्-इनि-ठन्-पिनि- श-न-इलच्-र-प्रत्ययाः) | |
| | लघुसिद्धान्तकौमुचनुसारं कृत्प्रत्ययाः - 12 (टाबादिस्त्रीप्रत्ययाः) | |
| अभ्यासाचे | | |
| स्रोत : | • https://onlinecourses.swayan2.ac.in/cec25_lgO2/preview | |
| | | |
| | | |

कला तृतीय वर्ष पंचम सत्र SAN-VSC- 351 SANSKRIT SANWAD VIKAS संस्कृत संवाद विकास

श्रेयांक : ४ बहिस्थ गुण :६०

एकूण तास : ६० अंतर्गत गुण:४०

Coarse Objectives:

- This course aims to get the students acquainted with Sanskrit *speaking*.
- The students enable with the concepts of Sanskrit *Grammer*.
- To provide the students with the knowledge of the Sanskrit *Vyaavhaarik Shabdkosh*.
- To make aware the students with different types of sanskrit shabdrup & Dhaturup.

Coarse Outcomes:

At the end of course, the students will be able to

- know the importance of Sanskrit *speaking*.
- get information about the concepts' of Sanskrit *Grammer*.
- get knowledge of the types of Sanskrit Vyaavhaarik Shabdkosh.
- identify different types of anskrits habdrup & Dhaturup.

| घटक | घटक विश्लेषण | तास |
|-----|---|-----|
| | संस्कृत वाक्य प्रबोध | |
| I | 1.1: गुरु शिष्य वार्तालाप. 1.2: नाम, निवास स्थान प्रकरण. 1.3: गृह आश्रम, भोजन प्रकरण. | १५ |
| | 1.4: देश देशांतर प्रकरण. संस्कृत वाक्य प्रबोध | |
| | | |
| | 2.1: सभा प्रकरण. | |
| | 2.2: राजा, प्रजा, राजनीति प्रकरण. | १५ |
| II | 2.3: शत्रु, मित्र प्रकरण. | |
| | 2.4: वैश्य व्यवहार, कुसीद ग्रहण प्रकरण | |
| | संस्कृत वाक्य प्रबोध | |
| | 3.1: नौका, विमान आदि प्रकरण. | |
| | 3.2: क्रय, विक्रय प्रकरण. | १५ |
| III | 3.3: गमनागमन प्रकरण. | |
| | 3.4: क्षेत्रवपन प्रकरण. | |

| | संस्कृत वाक्य प्रबोध | |
|-------------------|--|-----|
| | 4.1: शस्यच्छेदन,गवादि दोहन, क्रयविक्रय अर्घ प्रकरण. | |
| | 4.2: उत्तमर्ण, अधमर्ण, साक्षी प्रकरण. | १५ |
| IV | 4.3: सेव्यसेवक, रोग, मिश्रित, प्रकरण. | • • |
| | 4.4: ननंदभ्रातृ जाया, शरीर अवयव, ग्राम्य पशु प्रकरण. | |
| अभ्यासाचे स्रोत : | | |
| | 1) महर्षि दयानंद ; <i>अथ संस्कृत वाक्य प्रबोध</i> ; अजमेर; वैदिक पुस्तकालय दयानंद | |
| | आश्रम ,केसरगंज ;2010. | |
| | 2)संस्कृत भारती; <i>संस्कृत-व्यवहार-साहस्त्री</i> ; बेंगळुरू; अक्षरम् गिरीनगरम् ;2009. | |
| | 3)चंद्रदेव त्रिपाठी अतुल; <i>संस्कृत व्यवहारिक शब्दावली</i> ; अमेठी; श्रीमत परमहंस | |
| | संस्कृत महाविद्यालय, टीकरमाफी; 2010 | |
| | 4)महर्षिदयानंद; <i>संस्कृतवाक्यप्रबोध</i> ; संपा. युधिष्ठिर मीमांसक; रेवली, सोनिपत; | |
| | रामलाल कपूर ट्रस्ट. 2002 | |
| | 5). प्रतिभासाठे; <i>सुबोधसंस्कृतलेखन</i> ; पुणे; नितीनप्रकाशन, 2002. | |
| | 6. डॉ. कपिलदेवद्विवेदी; <i>प्रारंभिकरचनानुवादकौमुदी</i> ; वाराणसी; | |
| | विश्वभारतीप्रकाशन, 2004. | |
| | 7. निर्णयसागरिया; <i>शब्दरूपावलि</i> ; वाराणसी; चौखंभाविद्याभवन;2 016 | |
| | 8) ब्रहमदत्त जिज्ञासु ; <i>संस्कृत पठन पाठन की अनुभूत सरलतम विधि</i> ;रेवली , | |
| | सोनिपत; रामलालकपूर ट्रस्ट. 2002. | |
| | 9)पं. युधिष्ठिर मीमांसक; <i>शब्द रूपावली;</i> रेवली, सोनिपत; रामलालकपूर ट्रस्ट. | |
| | 2012. | |
| | 10)वेंपाटी कुटुंब शास्त्री ; <i>प्रथमा,द्वितीया,तृतीया दीक्षा</i> ; नवदेहली; राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान; 2014. | |

कला तृतीय वर्ष पंचम सत्र

SAN-ENT-351: On Job Training / Internship

श्रेयांक : ४ एकुण तास : ६० अंतर्गत गुण:४०

| , 67 | 9 |
|--|---|
| Coarse Objectives | To provide the students with actual work experience |
| , and the second | To make aware prescribe standards and guidelines at work |
| | To develop the employability of participating student |
| | To avail an opportunities to eventually acquire job experiences |
| Coarse | After successful completion of this course, students are expected to: |
| Outcomes: | Get actual work experience with office and virtual exposure to various management styles, technical, industrial, and procedural systems |
| | Acquaint the knowledge related to working hours, work protocols and guidelines |

Internship:

An internship is a professional learning experience that offers meaningful, practical work related to a student's field of study or career interest. An internship gives a student the opportunity for career exploration and development, and to learn new skills.

job experiences that match their potentials, skills, and competencies

Understand the roles and responsibilities of employee as well as team work Justify

On the job training:

On the job training is a form of training provided at the workplace. During the training, employees are familiarized with the working environment they will become part of. Employees also get hands-on experience using machinery, equipment, tools, materials, etc.

Internship/OJT Mechanism)

1. Pre-Approval Students should seek approval from the college before starting the Internship/OUT. This ensures that the Internship/OFT aligns with the curriculum and meets the necessary criteria.

- 2. Mentor and Supervisor: Each student should have an assigned mentor at the organization/industry where they are interning. Additionally, an Internship / OJT supervisor from the college will be appointed to guide and monitor the progress,
- 3. Regular Reporting: Students should maintain regular communication with their supervisor and mentor, providing progress reports and seeking feedback.
- 4. Professional Conduct: Students must adhere to professional conduct throughout the Internship /OJT, including punctuality, respect for colleagues, and adherence to the organization's/industry's policies and guidelines.
- 5. Student Diary: Students should maintain a diary to document their experiences, challenges faced, and lessons learned during the Internship/OJT,
- 6. Final Report: At the end of the Internship/OJT, students should submit a comprehensive final report, summarizing their accomplishments, contributions, and key takeaways.
- 7. Evaluation: The Internship/OJT is worth 4 credits (equivalent to 100 marks), and the

evaluation will be divided into two categories: one by the mentor and the other by the Internship/OJT supervisor. The mentor's evaluation (internal examination) will carry 40 marks, and it will be based on the student's performance during the Internship/OJT. External examination will be conducted by mentor and supervisor which will be based on the student's diary, the final report prepared by the student, and their performance in the final viva voce, and will carry 60 marks. The total marks obtained by the students in both evaluations will be added together for the purpose of final evaluation. The evaluation of the students will be conducted by the mentor using the valuation sheet provided by the college.

Internal Evaluation Criteria for Students by the Mentor:

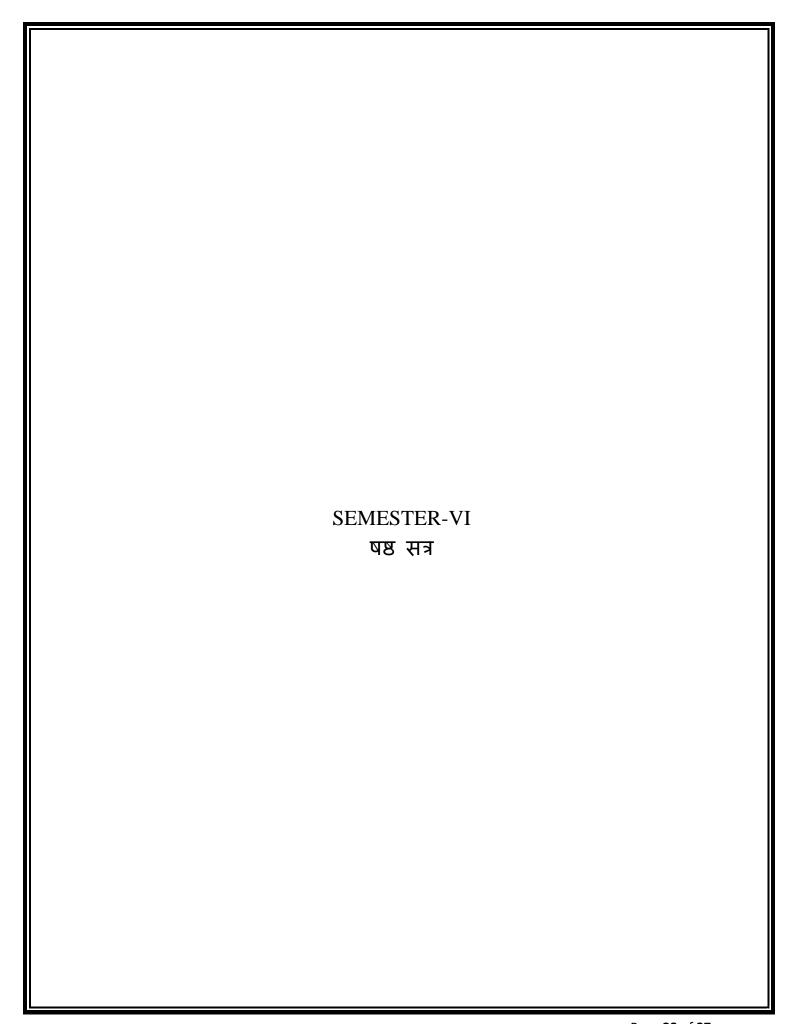
- 1. Quality of Work (10 marks): How well did the student perform their assigned tasks during the Internship / OJT? Evaluate the accuracy, thoroughness, and attention to detail in their work.
- 2. Initiative and Proactiveness (10 marks): Did the student show initiative in taking on additional responsibilities or tasks beyond their assigned role? Did they demonstrate a proactive attitude towards problem-solving?
- 3. Communication Skills (10 marks): Assess the student's ability to communicate effectively with colleagues, superiors, and clients (if applicable). Consider both written and verbal communication.
- 4. Problem-Solving Skills and Time Management (10 marks): Evaluate the student's ability to analyze problems, propose solutions, and implement effective strategies to overcome challenges. How well did the student manage their time during the Internship/OJT? Were they able to meet project deadlines and handle multiple tasks efficiently?

External Evaluation Criteria for Students by the Supervisor and Mentor:

- 1. Student Diary (15 marks): Review the student's diary to understand their reflections, insights gained, and self-assessment of their performance during the Internship/OJT.
- 2. Final Report (15 marks): Evaluate the quality and comprehensiveness of the student's final report, including the clarity of their achievements and contributions.
- 3. Presentation of Student in Viva Voce (30 marks): Evaluate the responses given by the student to the questions asked by the faculty in the Viva Voce.

Evaluation Criteria for Final Viva Voce:

- 1. Presentation Skills
- 2. Knowledge of the Internship/OJT Project
- 3. Practical Application and Work Experience
- 4. Problem-Solving and Critical Thinking
- 5. Communication and Professionalism



कला तृतीय वर्ष (संस्कृत) षष्ठ सत्र

SAN-DSC-361

MODERN SANSKRIT LITERATURE

आधुनिक सांस्कृत साहित्य

| श्रेयांक : २ | श्रेयांक : २ बहिस्थ गुण:२० | |
|-----------------------|---|------------|
| एकूण तास : ३ | म : ३० अन्तर्गत गुण:३० | |
| Coarse Objectives: | This course aims to get the students acquainted with Modern of sanskrit. The students enable with the concepts of Modern Sanskrit <i>lliterature</i> To provide the students with the knowledge of the types of Modern of Sanskrit literacture To make aware the students with different types of New literature | |
| Coarse Outcomes: | At the end of course, the students will be able to know the importance of Modern sanskrit. | |
| o accomes. | Know the importance of Modern Sanskrit. The students enable with the concepts of Modern Sanskrit <i>lliterature</i>. | |
| | To make aware the students with different types of New A | literature |
| घटक | घटक विश्लेषण | तासिका |
| | जम्मूकाश्मीर –विलास: | |
| | 1.1: जम्मूदर्शनम् 1.2: कश्मीर-मंडल-मार्ग: | |
| I | 1.3: श्रीनगर –वर्णनम् 1.4: गुलबर्ग –वर्णनम् | 15 |
| | 2.1: अमरेश्वर –यात्रा –विलास: | |
| | 2.2: पहलगाव-वर्णनम् | 15 |
| | 2.3: अमरनाथ-गुहा –मार्ग-वर्णनम् | |
| | 2.4: अमरनाथ-गुहा –मार्ग-वर्णनम् | |
| | | |
| अभ्यासाचे स्रोत: | जम्मूकाश्मीर –विलास:,प्रो.सुभाष वेदालंकार, अलंकार प्रकाशन | |
| स्रात: | ,जयपूर २००५ | |

कला तृतीय वर्ष षष्ठ सत्र SAN –DSC- 362 ATHRVAVEDIY SUKTE अथर्ववेदीय सूक्ते

श्रेयांक : ४

एकूण तास : ६०

बहिस्थ गुण :६०

अंतर्गत गुण:४०

| Coarse Objectives : | This course aims to get the students to know the important Literature To enable students to study the Vedic language and gramm To enable students with great <i>Devatas</i> and their powers. To make students aware with the great ancient heritage of literature | nar. |
|--|---|-----------------------|
| Coarse Outcomes: At the end of course, the students will be able to; know importance of Vedic Literature | | |
| | understand the Vedic language and grammar. learn about great poet and there literature of Sanskrit | |
| | Students will get awareness of the great ancient heritage literature | e of Sanskrit hymns & |
| घटक | घटकविश्लेषण | तासिका |
| | यजुर्वेद | |
| | 1. वेदातील देवतांचे मानवीकरण | |
| | 2. प्रजापती यजुर्वेद २३-१ (ऋचा १ ते १०) | |
| I | 3. शिवसंकल्प यजुर्वेद २.३४ (ऋचा १ ते ६) | |
| | 4. शिवसंकल्प सूक्ताचे मनोवैज्ञानिक महत्त्व. | १५ |
| | 1. ब्रम्हचर्य सूक्त अथर्व ११.५ ऋचा (१ ते १०) | |
| | 2. सूक्तांचे महत्त्व, देवतांचे उदात्तीकरण | |
| | 3. कृषि सूक्त अथर्व ३.१७ | |
| | 4. कृषि चे मानवी जिवनातील अनन्य साधारण महत्त्व | |
| | | १५ |

| | अथर्ववेद 1. भूमी सूक्त अथर्व (१२.१) ऋचा १ ते १५) 2. सूक्ताचे मानवी जीवनातील पर्यावरण दृष्टीकोनातून महत्त्व | |
|---|--|----|
| | 3. भेषज सूक्त अथर्व ५.२२ 4. भेषज सूक्ताचे वैदिक काळतील महत्त्व | १५ |
| | 1. काळ सूक्त अथर्व १०.५३ 2. काळाचे महत्त्व व उपयोगिता 3. सामनस्य सूक्त अथर्व. (३.१) ऋचा १ ते ७) 4. मानवी जीवनात औषधी वनस्पतीचे महत्त्व | १५ |
| अभ्यासाचे स्रोत: Suggested Reading: | | |
| rtodding. | वैद्य चि. वै. वैदिक वाङ्मायाचा इतिहास.पुणे. सुयोग प्रकाशन. २९९० दांडेकर रा. ना वैदिक देवता . गायत्री प्रकाशन. १९८० | |
| | डांगे सिंधू. <i>भारतीय साहित्याचा इतिहास</i>मंगल प्रकाशन, नागपूर.१९७५ वेलणकर, पराडकर, जोशी. ह.द.संपा. ऋक् सूक्त वैजयन्ति. पुणे. प्रकाशक, टी. म. वि. वैदिक संशोधन मंडळ. १९६५ | |
| | Macdonell, MunshiramManoharlal History of Sanskrit Literature, Delhi, 1958 | |
| | Chaubey B.B. The New Vedic Selection.Varanasi, Bharatiya Vidya Prakashan, 965 | |
| | शिप्रभा कुमार. वैदिक अनुशीलन, दिल्ली, विद्याभारती प्रकाशन, २०१७ जियालाल कम्बोज. संपा. ऋग्वेद. दिल्ली, विद्याभारती प्रकाशन, | |

कला तृतीय वर्ष षष्ठ सत्र SAN-DSC-363 Sanskrit Grammar-II व्याकरण - २

श्रेयांक : ४

Coarse

बहिस्थ गुण :६०

एकूण तास : ६०

अंतर्गत गुण:४०

| Objectives |
|------------|
| : |
| • |
| |
| |
| |
| |
| |
| Coarca |

- 1. To study the importance of various types of basic grammar &creative language.
- To know the basic knowledge about Sanskrit grammar of language
- To study the language skills.
- To know the literary &grammatically skills of Sanskrit language.

Coarse Outcomes:

At the end of course, the students will be able to;

- know the importance of various types of basic grammar
- know the basic knowledge of sanskrit language.
- get aware of language skills.& creative language.
- enable to know the literary &grammatically skills of Sanskrit language.

| घटक | घटक विश्लेषण | तासिका |
|-----|---|--------|
| I | संधी प्रकरण (लघु सिद्धांत कौमुदी) | |
| | 1.1: स्वरांचे प्रकार, | |
| | 2.2: संधीचे प्रकार | |
| | 3.3: संधीचे तीन प्रकार | 15 |
| | 4.4: स्वर, व्यंजन, विसर्ग | |
| II | स्वर संधी प्रकरण (लघु सिद्धांत कौमुदी) | |
| | 2.1: स्वर संधी | |
| | 2.2: इकोयण s चि | 15 |
| | 3. 3: एचो s यवायाव | 10 |
| | 4.4: गुण संधी, वृद्धी संधी | |
| III | हल संधी प्रकरण (लघु सिद्धांत कौमुदी) | |
| L | I | 1 |

| IV | 3.1: हल संधी 3.2: स्तो: श्चुना श्चु: 3.3: तोर्ली, झलांSजशोन्ते 3.4: खरि च, मोSनुस्वार: पदान्ताद्वा विसर्ग संधी प्रकरण (लघु सिद्धांत कौमुदी) 4.1: विसर्जनीयस्य स: | 15 |
|--|--|----|
| | 4.2; वा शरि, ससजुषो रु: ,हिश च 4.3: हिल सर्वेषाम् 4.4: रो रि, विप्रतिषेधे परं कार्यम् | 15 |
| अभ्यासाचे स्रोत: Suggested Reading: | सोमलवार,नीला. लाघुसिद्धांत कौमुदी- यवतमाळ. कौमुदी प्रकाशन, २००१. पेन्ना, मधुसूदन, वीसा. संस्कृत साधना,नागपूर विसा बुक्स, २०११ जोशी, म. द, लघुसिद्धांत कौमुदी. पुणे: म. द,जोशी आणि लोखंडे प्रकाशन.१८८३ 4. आचार्य कपिलदेव, (संपा). संस्कृत व्याकरण एवं लघुसिद्धांत कौमुदी. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन,२०१२ मराठे, हंसश्री, कृदंत -सिद्धाता, नागपूर:सतीश मराठे प्रकाशन, १९९९ सिद्धालंकार, पं हरिचरण, ऋग्वेद भाष्य-नई दिल्ली: प्रकाशक, विजय कुमार गोंविद हातानंद, २०१२ भारव्दाज रमेश, वत्स शास्त्री, झा अमरजी. संस्कृत-व्याकरण-प्रवेशिका. दिल्ली, विद्या भारती प्रकाशन,२०१७ दीक्षित भट्टोजी घिल्डियाल श्रीधरानन्द (हिंदी अनुवाद) सिद्धांतकौमुदी-सिध प्रकरण, दिल्ली, मोतीलाल बनारसी दास प्रकाशन,२०१६ शास्त्री राम बालक,शर्मा गिरिजा प्रकाश, संस्कृत रचानानुवाद चिन्द्रका. दिल्ली, मोतीलाल बनारसी दास प्रकाशन,२०१६ शास्त्री चारुदेव, व्याकरण चंद्रोदय (५ खंड)संधीवसमास,दिल्ली,मोतीला लबनारसीदासप्रकाशन,२०१६ | |

कला तृतीय वर्ष षष्ठ सत्र SAN-DSC-364 DRAMA (PRATIMA NATAK) नाटक (प्रतिमा नाटक)

श्रेयांक : ४

एकूण तास : ६० अंतर्गत गुण:४०

| | • | 3 | |
|-------------------|---|----------------|--|
| Coarse | | | |
| Objective: | This course aims to get the students to know about the sanskrit drama. To aware the students with basic concept of drama in sanskrit | | |
| | | | |
| | • To enable the students with the tools and technique of great s | sanskrit drama | |
| | • □ To know the deferent characters and characteristics. | | |
| Coarse | At the end of course, the students will be able to; | | |
| Outcomes: | | | |
| | • know the importance of Sanskrit Drama. | | |
| | learn basic concepts of drama in Sanskrit. | | |
| | • learn tools and technique of great Sanskrit drama. | | |
| | • get information about the deferent characters and characteris | ucs | |
| घटक | घटक विश्लेषण | तासिका | |
| | प्रतिमा नाटक भास | | |
| | 1.1 अंक-१ प्रस्तावना आणि नांदी | | |
| | 1.2 अंक-१ भाषांतर, चरित्र चित्रण, नाट्य प्रसंगाचे | 15 | |
| | विश्लेषण, रस | | |
| | 1.3 अंक-२ प्रस्तावना , मागील घटनांचा इतिवृत्त | | |
| | 1.4 अंक-२ भाषांतर, चरित्र चित्रण नाट्य प्रसंगाचे | | |
| | विश्लेषण, रस | | |
| | प्रतिमा नाटक -भास | | |
| | 2.1 अंक ३ प्रस्तावना, मागील घटनांचा इतिवृत्त | 45 | |
| | 2.2 अंक ३ भाषांतर, चरित्र चित्रण, नाट्य प्रसंगाचे | 15 | |
| | विश्लेषण, रस | | |
| | 2.3 अंक ४ प्रस्तावना, मागील घटनांचा इतिवृत्त | | |
| | 2.4 अंक ४ भाषांतर, चरित्र चित्रण, नाट्य प्रसंगाचे | | |
| | विश्लेषण रस | | |

| | प्रतिमा नाटक-भास | |
|-----------|--|----|
| | 3.1 अंक ५ प्रस्तावना, मागील घटनांचा इतिवृत्त | 45 |
| | 3.2 अंक ५ भाषांतर, चरित्र चित्रण, नाट्य प्रसंगाचे | 15 |
| | विश्लेषण, रस | |
| | 3.3 अंक ६ प्रस्तावना, मागील घटनांचा इतिवृत्त | |
| | 3.4 अंक ६ भाषांतर, चरित्र चित्रण, नाट्य प्रसंगाचे | |
| | विश्लेषण, रस | |
| | प्रतिमा नाटक -भास | 15 |
| | 4.1 अंक ७ प्रस्तावना, मागील घटनांचा इतिवृत्त | |
| | 4.2 अंक ७ भाषांतर, चरित्र चित्रण, नाट्य प्रसंगाचे | |
| | विश्लेषण, रस | |
| | 4.3 अंक १ ते ७ प्रस्तावना, मागील घटनांचा इतिवृत्त | |
| | 4.4 अंक १ ते ७ नाटकीय योजना , रस व चरित्र | |
| | चित्रण | |
| अभ्यासाचे | 1) भास, <i>प्रतिमानाटक.</i> वाराणसी: चौखम्बा प्रकाशन, १९९० | |
| स्रोत: | 2) भास, देवधर सी.आर (संपा). <i>भास नाटकचक्रम्</i> . पुणे: ओरिएण्टल बुक | |
| Suggested | एजंसी, १९६२ | |
| Suggested | 3) भास, हातवळणे दि.मो (संपा). केलकर म.मो, | |
| Reading: | 4)भास <i>नाटकचत्रयम्</i> ,पुणे: प्रका.एस.आर.देशमुख प्रकाशन,७३९ | |
| | बुधवार पेठ, १९६२ | |
| | | |
| | | |
| | | |

कला तृतीय वर्ष षष्ठ सत्र SAN-DSE – 361 (A) UPANISHAD (TAITTARIYOPANISHAD)

| | े उपनिषद (तैत्तरियोपनिषद्) | |
|-----------------------|---|----------------|
| श्रेयांक : ४ | · | बहिस्थ गुण :६० |
| एकूण तास : ६० | | अंतर्गत गुण:४० |
| Coarse Objectives: | To study the Indian philosophy. To study the importance of philosophy in human life. To study the philosophy of <i>Taitiriyonishada</i> To study the philosophy of <i>Taitiriyonishada</i> | J |
| Coarse Outcomes: | At the end of course, the students will be able to. 1. understand the Indian philosophy. 2.know the importance of philosophy in human life. 3.learn the philosophy of <i>Taitiriyonishada</i> 4.know the philosophy of <i>Taitiriyonishada</i> | |
| घटक | घटक विश्लेषण | तासिका |
| I | तैत्तरियोपनिषद शिक्षा वल्ली 1.1: उपनिषद परिचय: 1.2 : प्रथम-द्वितीय-अनुवाक: 1.3 : तृतीय-चतुर्थ-अनुवाक: 1.4 : पंचम-षष्ठ-अनुवाक: | 15 |
| II | तैत्तरियोपनिषद शिक्षा वल्ली ब्रह्मानंद वल्ली 2.1: सप्त-अष्ट-अनुवाक: 2.2: नव-दश-अनुवाक: 2.3: एकादश-द्वादश-अनुवाक: 2.4: (ब्रह्मानंद वल्ली) प्रथम-द्वितीय-अनुवाक: तैत्तरियोपनिषद ब्रह्मानंद वल्ली | 15 |
| III | 3.1: तृतीय-चतुर्थ-अनुवाक: 3.2: पंचम-षष्ठ-अनुवाक: 3.3: सप्त-अष्ट-अनुवाक: 3.4: नवम-अनुवाक: | 15 |

| | तैत्तरियोपनिषद भृग् वल्ली | |
|-------------------|---|----|
| IV | 4.1 प्रथम-द्वितीय-तृतीय-चतुर्थ-अनुवाक: 4.2 पंचम-षष्ठ-सप्तम-अनुवाक: 4.3 अष्ट-नवम-अनुवाक: 4.4 दशम-अनुवाक: | 15 |
| अभ्यासाचे स्रोत : | | |
| | 1.संपा. राजेंद्र प्रसाद शर्मा ,१. तैत्तरियोपनिषद, जगदीश संस्कृत | |
| | पुस्तकालय,जयपूर ,राजस्थान 2011 . | |
| | 2.विद्यामार्तंड डों. सत्यव्रत सिद्धांतालंकार ,२.एकादशोपनिषद , | |
| | विजयकृष्ण लखनपाल ,w -77 a ग्रेटर कैलाश-1 नई दिल्ली -48 | |
| | २.तैत्तरियोपनिषद, संपा.डॉ. सत्यव्रत सिंह. | |
| | वाराणासी,चौखंबाप्रकाशन,१९ | |
| | ३.उपनिषद प्रकाश (मराठी). महात्मा नारायण स्वामी,विजयकुमार गोर्विंदराम हासानंद 4408 ,नई सडक,दिल्ली -06 | |
| | ४.तैत्तरियोपनिषद — वाराणासी , चौखंबा सुरभारती प्रकाशन १९९२ | |
| | ५.तैत्तरियोपनिषद — गीताप्रेस गोरखपुर प्रकाशन ,2010 | |
| | 9 . | |
| | | |

| प्रकार प्रशास वर्ष सन SAN-DSE -361 (B) FROM Swayam course (Sanskrit Composition and Communication) श्रेयांक : ४ वहिस्थ गुण : ६० अंतर्गत गुण:४० विहस्थ गुण:४० विहस्य गुण:४० विहस्थ गुण:४० विहस्य गुण:४० विहस्थ गुण:४० विहस्य | | कला तृतीय वर्ष | |
|---|-----------|---|-------------|
| SAN-DSE -361 (B) FROM Swayam course (Sanskrit Composition and Communication) श्रेयांक : ४ वहिस्थ गुण :६० एकूण तास : ६० अंतर्गत गुण:४० Coarse Objectives: Dijectives: Objectives: At the end of course, the students will be able to. 1.understand the basic Sanskrit Language. 2.know the importance of Sanskrit Language. 3.learn the Communication of Sanskrit Language. 2.know the Sanskrit Composition& Grammar The study the Sanskrit Composition& Grammar At the end of course, the students will be able to. 1.understand the basic Sanskrit Language. 3.learn the Communication of Sanskrit Language. 4.know the Sanskrit Composition& Grammar. The study the Sanskrit Composition& Grammar. The study the Sanskrit Language. 3.learn the Communication of Sanskrit Language. 4.know the Sanskrit Language. 3.learn the Communication of Sanskrit Language. 4.know the Sanskrit Language. 4.know the Sanskrit Language. 3.learn the Communication of Sanskrit Language. 4.know the Sanskrit Language. 6.know the Sansk | | - | |
| (Sanskrit Composition and Communication) श्रेयांक ; ४ वहिस्थ गुण :६० एकूण तास : ६० Siतर्गत गुण:४० Coarse Objectives: 1. To study the basic Sanskrit Knowledge . 2. To study the importance of Sanskrit Language, 3. To study the Sanskrit Composition& Grammar Coarse Outcomes: At the end of course, the students will be able to. 1. understand the basic Sanskrit Knowledge. 2. know the importance of Sanskrit Language, 3. learn the Communication of Sanskrit Language 4. know the Sanskrit Composition& Grammar. Eco Eco Eco Eco Eco Eco Eco Ec | | | |
| श्रेयांक : ४ बहिस्थ गुण :६० एकूण तास : ६० अंतर्गत गुण :४० Coarse Objectives: 1. To study the basic Sanskrit Knowledge . 2. To study the Communication of Sanskrit Language . 3. To study the Sanskrit Composition& Grammar At the end of course, the students will be able to. 1. Understand the basic Sanskrit Knowledge. 2. know the importance of Sanskrit Language. 3. learn the Communication of Sanskrit Language. 3. learn the Communication of Sanskrit Language. 4. know the Sanskrit Composition& Grammar. Takes Wijorahituin: संस्कृत संस्कृताद ऑग्लभाषायां चानुवाद: -1 अगंग्लभाषात: संस्कृत संस्कृताद औग्लभाषायां चानुवाद: -2 ससाह:-8 11 ससाह:-8 18 ससाह:-8 18 स्कृत संस्कृताद हिन्यां चानुवाद: -1 हिन्दीभाषात: संस्कृत संस्कृताद हिन्यां चानुवाद: -2 हिन्दीभाषात: संस्कृत संस्कृताद हिन्यां चानुवाद: -3 | | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | |
| To study the basic Sanskrit Knowledge | • | <u>.</u> | |
| To study the basic Sanskrit Knowledge | याक : ४ | बहि | स्थ गुण :६० |
| Objectives: 2. To study the importance of Sanskrit Language. 3. To study the Communication of Sanskrit Language. 3. To study the Sanskrit Composition& Grammar Coarse Outcomes: 1. understand the basic Sanskrit Knowledge. 2. know the importance of Sanskrit Language. 3. learn the Communication of Sanskrit Language. 4. know the Sanskrit Composition& Grammar. UCOST URITY URI | कूण तास : | ६० अंत | र्गत गुण:४० |
| 3. To study the Communication of Sanskrit Language 4. To study the Sanskrit Composition& Grammar Coarse Outcomes: At the end of course, the students will be able to. 1. understand the basic Sanskrit Knowledge. 2. know the importance of Sanskrit Language 4. know the Communication of Sanskrit Language 4. know the Sanskrit Composition& Grammar. UCA RHIR:-7 ### अंग्लभाषातः संस्कृते संस्कृताद् आंग्लभाषायां चानुवादः - 1 आंग्लभाषातः संस्कृते संस्कृताद् आंग्लभाषायां चानुवादः - 2 आंग्लभाषातः संस्कृते संस्कृताद् आंग्लभाषायां चानुवादः - 3 #### समाहः-8 ################################### | | • | |
| 4. To study the Sanskrit Composition& Grammar Coarse Outcomes: At the end of course, the students will be able to. 1. understand the basic Sanskrit Knowledge. 2. know the importance of Sanskrit Language. 3. learn the Communication of Sanskrit Language 4. know the Sanskrit Composition& Grammar. uटक uटक विश्लेषण ससाहः-7 अंग्लभाषातः संस्कृते संस्कृताद् आंग्लभाषायां चानुवादः - 1 आंग्लभाषातः संस्कृते संस्कृताद् आंग्लभाषायां चानुवादः - 2 आंग्लभाषातः संस्कृते संस्कृताद् आंग्लभाषायां चानुवादः - 3 ससाहः-8 II हिन्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिन्यां चानुवादः - 2 हिन्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिन्यां चानुवादः - 3 | bjechves. | | |
| Outcomes: 1.understand the basic Sanskrit Knowledge. 2.know the importance of Sanskrit Language. 3.learn the Communication of Sanskrit Language 4.know the Sanskrit Composition& Grammar. TI HRIF:-7 (%9) HI () अंग्लभाषात: संस्कृते संस्कृताद् आंग्लभाषायां चानुवाद: -1 HRIF:-8 TI HRIF:-8 RE-दीभाषात: संस्कृते संस्कृताद् हिन्यां चानुवाद: -1 हिन्दीभाषात: संस्कृते संस्कृताद् हिन्यां चानुवाद: -2 हिन्दीभाषात: संस्कृते संस्कृताद् हिन्यां चानुवाद: -3 | | | |
| 2.know the importance of Sanskrit Language. 3.learn the Communication of Sanskrit Language 4.know the Sanskrit Composition& Grammar. uca विश्लेषण सप्तहः-7 अग्वलभाषातः संस्कृते संस्कृताद् आग्वलभाषायां चानुवादः -1 आग्वलभाषातः संस्कृते संस्कृताद् आग्वलभाषायां चानुवादः -2 आग्वलभाषातः संस्कृते संस्कृताद् आग्वलभाषायां चानुवादः -3 सप्ताहः-8 II हिन्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिन्दां चानुवादः -1 हिन्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिन्दां चानुवादः -2 हिन्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिन्दां चानुवादः -2 हिन्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिन्दां चानुवादः -2 हिन्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिन्दां चानुवादः -3 | | | |
| 3.learn the Communication of Sanskrit Language 4.know the Sanskrit Composition& Grammar. | utcomes: | _ | |
| 4.know the Sanskrit Composition & Grammar. | | | |
| घटक विश्लेषण ससाहः-7 अांग्लभाषातः संस्कृते संस्कृताद् आंग्लभाषायां चानुवादः - 1 आंग्लभाषातः संस्कृते संस्कृताद् आंग्लभाषायां चानुवादः - 2 आंग्लभाषातः संस्कृते संस्कृताद् आंग्लभाषायां चानुवादः - 3 ससाहः-8 II हिन्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिन्यां चानुवादः - 1 हिन्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिन्यां चानुवादः - 2 हिन्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिन्यां चानुवादः - 3 | | | |
| अांग्लभाषातः संस्कृते संस्कृताद् आंग्लभाषायां चानुवादः -1 आंग्लभाषातः संस्कृते संस्कृताद् आंग्लभाषायां चानुवादः -2 आंग्लभाषातः संस्कृते संस्कृताद् आंग्लभाषायां चानुवादः -3 ससाहः-8 | घटक | घटक विश्लेषण | तास |
| अांग्लभाषातः संस्कृते संस्कृताद् आंग्लभाषायां चानुवादः -1 आंग्लभाषातः संस्कृते संस्कृताद् आंग्लभाषायां चानुवादः -2 आंग्लभाषातः संस्कृते संस्कृताद् आंग्लभाषायां चानुवादः -3 ससाहः-8 शिक्ष्यीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिन्दां चानुवादः -1 हिन्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिन्दां चानुवादः -2 हिन्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिन्दां चानुवादः -2 हिन्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिन्दां चानुवादः -3 | | सप्ताहः-7 | |
| अांग्लभाषातः संस्कृते संस्कृताद् आंग्लभाषायां चानुवादः -1 आंग्लभाषातः संस्कृते संस्कृताद् आंग्लभाषायां चानुवादः -2 आंग्लभाषातः संस्कृते संस्कृताद् आंग्लभाषायां चानुवादः -3 ससाहः-8 श्व हिन्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिन्यां चानुवादः -1 हिन्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिन्यां चानुवादः -2 हिन्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिन्यां चानुवादः -2 हिन्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिन्यां चानुवादः -3 | | | 96 |
| आंग्लभाषातः संस्कृते संस्कृताद् आंग्लभाषायां चानुवादः - 3 ससाहः-8 हिल्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिल्यां चानुवादः - 1 हिल्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिल्यां चानुवादः - 2 हिल्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिल्यां चानुवादः - 3 | | आंग्लभाषातः संस्कृते संस्कृताद् आंग्लभाषायां चानुवादः – 1 | ,, |
| ससाहः-8 १५ हिन्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिन्दां चानुवादः – 1 हिन्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिन्दां चानुवादः – 2 हिन्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिन्दां चानुवादः – 3 | | आंग्लभाषातः संस्कृते संस्कृताद् आंग्लभाषायां चानुवादः – 2 | |
| श्व हिन्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिन्धां चानुवादः - 1 हिन्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिन्धां चानुवादः - 2 हिन्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिन्धां चानुवादः - 3 | I | आंग्लभाषातः संस्कृते संस्कृताद् आंग्लभाषायां चानुवादः -3 | |
| हिन्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिन्यां चानुवादः - 1 हिन्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिन्यां चानुवादः - 2 हिन्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिन्यां चानुवादः - 3 | | सप्ताहः-8 | |
| हिन्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिन्यां चानुवादः - 1 हिन्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिन्यां चानुवादः - 2 हिन्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिन्यां चानुवादः - 3 | II | | 96 |
| हिन्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिन्दां चानुवादः – 3 | 11 | हिन्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिन्यां चानुवादः – 1 | ,, |
| | | हिन्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिन्धां चानुवादः – 2 | |
| हिन्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिन्द्यां चानुवादः – 4 | | हिन्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिन्धां चानुवादः - 3 | |
| | | हिन्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिन्यां चानुवादः – 4 | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |

| हिल्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिल्यां चानुवादः -5 हिल्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिल्यां चानुवादः -6 हिल्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिल्यां चानुवादः -7 | हिल्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिल्यां चानुवादः -5 हिल्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिल्यां चानुवादः -6 हिल्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिल्यां चानुवादः -7 ससाहः-10 च्यावहारिकसंस्कृतम् (संस्कृतसम्भाषणम्) - 1 च्यावहारिकसंस्कृतम् (संस्कृतसम्भाषणम्) - 2 च्यावहारिकसंस्कृतम् (संस्कृतसम्भाषणम्) - 3 च्यावहारिकसंस्कृतम् (संस्कृतसम्भाषणम्) - 4 अथासाचे | III | सप्ताहः-9 | |
|--|---|---------|--|----|
| | | | हिन्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिन्यां चानुवादः -5 | १५ |
| N | Name | | हिन्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिन्द्यां चानुवादः -6 | |
| IV व्यावहारिकसंस्कृतम् (संस्कृतसम्भाषणम्) - 1 १५ व्यावहारिकसंस्कृतम् (संस्कृतसम्भाषणम्) - 2 व्यावहारिकसंस्कृतम् (संस्कृतसम्भाषणम्) - 3 व्यावहारिकसंस्कृतम् (संस्कृतसम्भाषणम्) - 4 अभ्यासाचे अभ्यासाचे १५ | IV | | हिन्दीभाषातः संस्कृते संस्कृताद् हिन्द्यां चानुवादः -7 | |
| च्यावहारिकसंस्कृतम् (संस्कृतसम्भाषणम्) - 1 च्यावहारिकसंस्कृतम् (संस्कृतसम्भाषणम्) - 2 च्यावहारिकसंस्कृतम् (संस्कृतसम्भाषणम्) - 3 च्यावहारिकसंस्कृतम् (संस्कृतसम्भाषणम्) - 4 अभ्यासाचे | च्यावहारिकसंस्कृतम् (संस्कृतसम्भाषणम्) - 1 च्यावहारिकसंस्कृतम् (संस्कृतसम्भाषणम्) - 2 च्यावहारिकसंस्कृतम् (संस्कृतसम्भाषणम्) - 3 च्यावहारिकसंस्कृतम् (संस्कृतसम्भाषणम्) - 4 अभ्यासाचे | | सप्ताहः-10 | |
| व्यावहारिकसंस्कृतम् (संस्कृतसम्भाषणम्) – 3 व्यावहारिकसंस्कृतम् (संस्कृतसम्भाषणम्) – 4 अभ्यासाचे | व्यावहारिकसंस्कृतम् (संस्कृतसम्भाषणम्) – 3 व्यावहारिकसंस्कृतम् (संस्कृतसम्भाषणम्) – 4 | IV | व्यावहारिकसंस्कृतम् (संस्कृतसम्भाषणम्) - 1 | १५ |
| व्यावहारिकसंस्कृतम् (संस्कृतसम्भाषणम्) – 4 अभ्यासाचे | च्यावहारिकसंस्कृतम् (संस्कृतसम्भाषणम्) – 4 अभ्यासाचे | | व्यावहारिकसंस्कृतम् (संस्कृतसम्भाषणम्) – 2 | |
| अभ्यासाचे | भभ्यासाचे । | | व्यावहारिकसंस्कृतम् (संस्कृतसम्भाषणम्) – 3 | |
| | | | व्यावहारिकसंस्कृतम् (संस्कृतसम्भाषणम्) – 4 | |
| | | म्रोत : | • https://onlinecourses.swayan2.ac.in/cec25_lgO2/preview | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |

कला तृतीय वर्ष षष्ठ सत्र SAN-VSC- 361 संस्कृत लेखन विकास Sanskrit Lekhan Vikas

श्रेयांक : ४ एकूण तास : ६० बहिस्थ गुण :६०

अंतर्गत गुण:४०

Coarse Objestive:

- This course aims to get the students acquainted with Sanskrit Writing.
- The students enable with the concepts of Sanskrit Grammer.
- To provide the students with the knowledge of the Sanskrit Letter & Essay Writing.
- To make aware the students with different types of Aatmnepadi Dhaturup.

Coarse Outcomes:

At the end of course, the students will be able to

- know the importance of Sanskrit Writing.
- get information about the concepts' of Sanskrit *Grammer*.
- get knowledge of the types of Sanskrit Letter & Essay.
- identify different types of *Aatmnepadi Dhaaturup*.

| घटक | घटक विश्लेषण | तास |
|-----|--|-----|
| | संस्कृत निबंध लेखन | |
| I | 1.1 विविध संस्कृत वाक्य लेखन अभ्यास 1.2 सर्जनशील लेखन 1.3 काट्य ,नाट्य, लेखन | १५ |
| | 1.4 माध्यमांसाठी लेखन | |
| | संस्कृतपत्र लेखन | |
| | 2.1 संस्कृत पत्र लेखन वाक्य अभ्यास | |
| II | 2.2 पारिवारिक पत्र लेखन | १५ |
| | 2.3 महाविद्यालयीन पत्र लेखन | |
| | 2.4 कार्यालयीनपत्रलेखन | |
| | संस्कृत आंतरजालीय लेखन | |
| | 3.1 आंतरजालाचे महत्व | |
| III | 3.2 आंतरजालीय निबंध लेखन | १५ |
| 111 | 3.3 आंतरजालीयपत्रलेखन | |

| | 3.4 आंतरजालीय शोध लेखन | |
|----|---|----|
| | परस्मैपदी धातु रूप | |
| IV | 4.1 परस्मैपदी प्रत्यय परिचय 4.2 परस्मैपदी आत्मनेपदी धातु परिचय | १५ |
| IV | 4.3 परस्मैपदी रुप परिचय | |
| | 4.4 लट्,लोट,लृट्,विधिलिङ्, लङ्लकार. | |

मूळजी जेठा (स्वायत्त)महविद्यालय

संस्कृत अभ्यास मंडळ

| नाव | महाविद्यालय | पद |
|----------------|---|---------|
| प्रो.भाग्यश्री | मू.जे.(स्वायत्त) महविद्यालय जळगाव. | अध्यक्ष |
| भलवत्कर | | |
| डॉ.अखिलेश | म्.जे.(स्वायत्त) महविद्यालय जळगाव. | सदस्य |
| शर्मा | | |
| डॉ.क्रांती | बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठ, औरंगाबाद. | सदस्य |
| व्यवहारे | | |
| डॉ.पंकजा | शासकीय ज्ञान विज्ञान महाविद्यालय, | सदस्य |
| वाघमारे | औरंगाबाद. | |
| प्रो.कविता | कविकुलगुरू कालिदास संस्कृत विद्यापीठ ,रामटेक. | सदस्य |
| होले | | |
| डॉ.जयश्री | शंकरलाल खंडेलवाल महाविद्यालय, अकोला. | सदस्य |
| सकळकळे | | |

शुभमस्तु